परिसर प्रतिबिंब

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

परिसर प्रतिबिंब दिसंबर,, 2019

कुलपति की कलम से...

एक जाग्रत समाज एक सजग राष्ट्र के निर्माण एवं राष्ट्रीय चेतना के सृजन का मूल है। व्यक्ति, समाज की प्राथमिक इकाई है। इस प्रकार एक राष्ट्र में निवास करने वाले व्यक्तियों के आचरण से ही राष्ट्र की दशा एवं दिशा का निर्धारण होता है। शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षण संस्थान इसमें निर्णायक भूमिका का निर्वहन करते हैं। व्यक्ति में मानवीय मूल्यों का सृजन व विकास, सामाजिक दायित्वों के प्रति चेतनता और राष्ट्रहित के प्रति सजग्र प्रतिबद्धता ही शिक्षा व्यवस्था को पूर्ण आयाम प्रदान करते हैं । गौतम बुद्ध, महावीर, चाणक्य की यह पावन भूमि जो विहार से क्रमशः आधुनिक बिहार के रूप में ख्यात हुई। बिहार की इस पूज्य धरती पर चंपा की नगरी चम्पारण में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम पर स्थापित महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधी जी की 150 वी जयंती वर्ष में विविध सृजनात्मक, प्रेरक व नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से बापू के चिंतन व विचारों को प्रसारित, प्रचारित और प्रदर्शित करने के लिए प्रयासरत है। विश्वविद्यालय नए–नए विभाग व संकाय प्रारंभ कर विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करने हेतु सतत प्रयत्नशील है। प्रेम, समरसता एवं सहिष्णुता की इस भूमि पर सबको साथ लेकर चलने के कार्य संस्कृति को विश्वविद्यालय ने अंगीकार करने का प्रयास किया और अनवरत प्रगति पथ पर नित नवीन सोपान के सृजन को अग्रसर हैं ....

प्रो. संजीव कुमार शर्मा

कुलपति ने की राष्ट्रपति से भेंट

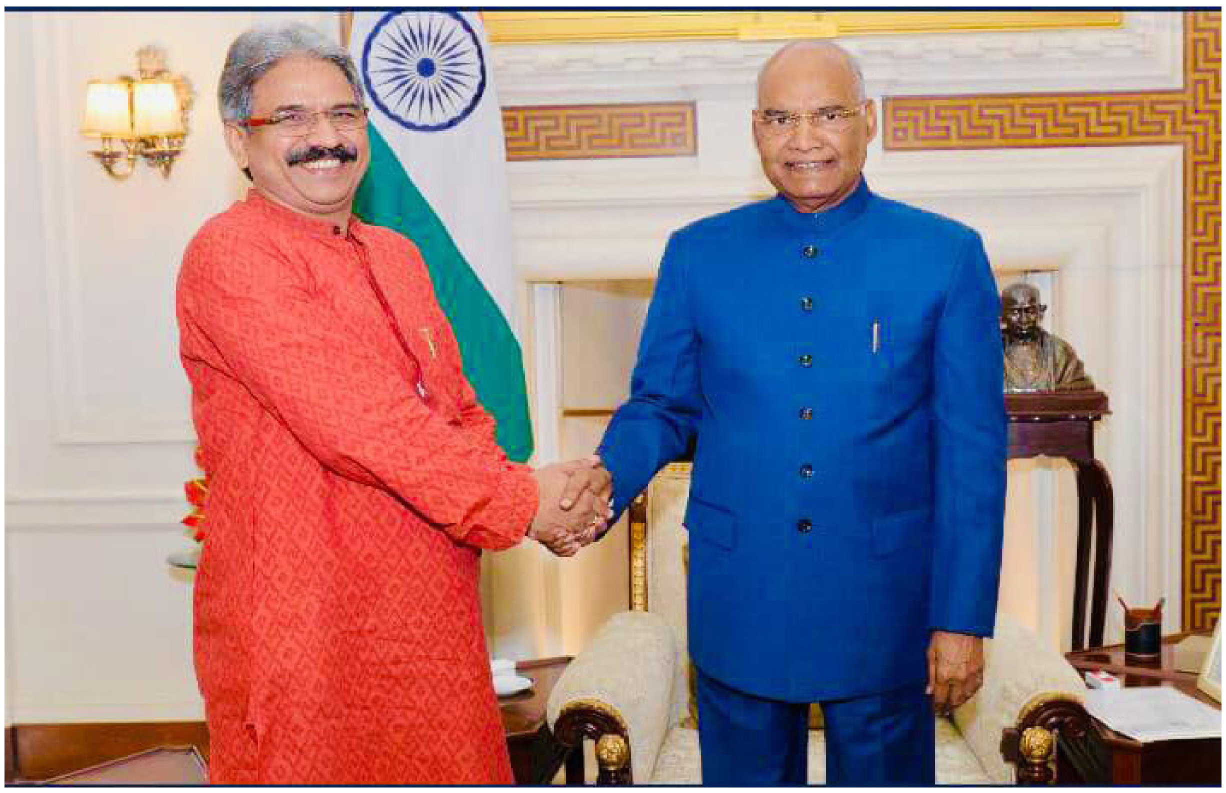

प्रथम दीक्षांत समारोह को लेकर महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद से राष्ट्रपति भवन में सौजन्य भेंट करते हुए कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा

बनकट में 'गांधी भवन' का उद्घाटन समारोह

बनकट स्थित विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर में गांधी भवन का उद्घाटन कुलपति प्रो. संजीव शर्मा ने किया। उद्घाटन समारोह का आरंभ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। जिसने पर्यावरण को सकारात्मक ऊर्जा से भर दिया।

इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय के इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है और मुझे खुशी है कि हम सभी इस शुभ अवसर के साक्षी बन रहे हैं। कुलपति ने सभी शिक्षकों, छात्रों, प्रशासनिक अधिकारियों, मोतिहारी के नागरिकों, मीडिया, जिला और राज्य सरकार, यूजीसी और एमएचआरडी को उनके सर्वांगीण सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

विश्वविद्यालय को 102 एकड़ भूमि

विश्वविद्यालय की आधारशिला रखेंगे महामहिम राष्ट्रपति

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के लिए अधिग्रहित भूमि को आधिकारिक रूप से विश्वविद्यालय प्रशासन को सौंप दिया गया, फुर्सतपुर स्थित 101.15 एकड़ भूमि के कागजात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा ने ग्रहण किया। इस अधिग्रहित भूमि के काश्तकारों को भुगतान के लिए 54 करोड़ रुपए मुजफ्फरपुर स्थित प्राधिकार में जिला भू अर्जन विभाग द्वारा जमा कराया जा चुका है। प्राधिकार के निर्णय के बाद अधिग्रहित भूमि वाले काश्तकारों को भुगतान करने के प्रक्रिया शुरू की जाएगी। केंद्रीय विश्वविद्यालय में भवन निर्माण कार्य की आधारशिला रखने के लिए महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के आने की संभावना है। गौरतलब है कि राष्ट्रपति के विश्वविद्यालय दौरे को राष्ट्रपति भवन ने औपचारिक सहमति प्रदान कर दी है।

विश्व एड्स दिवस पर अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन

संवेदना और जागरूकता बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयास

विश्व एड्स दिवस 'के अवसर पर, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के सामाजिक कार्य विभाग द्वारा जागरूकता कार्यक्रम और एचआ. ईवी और एड्स के खिलाफ रन' का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा ने किया। उन्होंने विभाग के प्रयासों की सराहना की और छात्रों और संकाय सदस्यों से स्थानीय आबादी और उच्च जोखिम वाले समूहों के बीच एचआईवी और एड्स के बारे में जागरूकता के संदेश को फैलाने के लिए अनवरत प्रयास करने का आग्रह किया।

विश्वविद्यालय में संविधान दिवस का आयोजन

DEPARTMENT OF JUSTICE
CONSTITUTION DAY & CITIZENS DUTIES
26th November 2019

संविधान दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर में 26 नवंबर को संविधान की प्रस्तावना पढ़ी गयी। सभी शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

मानवाधिकार दिवस के अवसर पर महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के एस० सी० रॉय और सामाजिक कार्यकर्ता सुमन सिंह ने अपना वक्तव्य दिया।

उच्चतर शिक्षा की चुनौतियों पर विशिष्ट व्याख्यान

MAHATMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY

विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर में यूजीसी के सदस्य प्रो. सुषमा यादव और प्रो. जी. गोपाल रेड्डी ने 'गांधी भवन' का दौरा किया। माननीय कुलपति ने उन्हें विश्वविद्यालय की प्रगति और विकास से अवगत कराया।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर में सोमवार को 'भारत में उच्चतर शिक्षा की चुनौतियां' विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रो. रेड्डी ने अपने वक्तव्य में भारत में उच्चतर शिक्षा के इतिहास के प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित किया। उन्होंने भारत में उच्च शिक्षा के विभिन्न पहलुओं और इसके परिवर्तन के बारे में विस्तार से बताया। भारत में उच्चतर शिक्षा से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों को सूचीबद्ध करते हुए भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए किए जा रहे उपायों पर भी चर्चा की।

विश्वविद्यालय को 8.5 लाख रुपए

महात्मा गाधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर में एक विशेष कार्यक्रम के अवसर पर गांधी विकास सेवा संस्थान के अध्यक्ष,
गांधी संग्रहालय, मोतिहारी के सचिव व प्रख्यात गांधीवादी विचारक श्री ब्रज किशोर सिंह ने विश्वविद्यालय को 8.5 लाख रुपये की राशि प्रदान की।

महात्मा गांधी के नाम से स्थापित इस विश्वविद्यालय में यह कोष रहेगा और पूरे हिंदुस्तान में प्रत्येक वर्ष गांधी पर सबसे अच्छी पुस्तक लिखने वाले लेखकों को 51 हजार रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाएगा।

माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने ब्रज किशोर सिंह की सराहना करते हुए कहा कि अकादमिक पवित्रता के साथ सामाजिक पवित्रता भी आज संबद्ध हुई है।

पांचवी वीं अकादमिक परिषद की बैठक

विश्वविद्यालय की 5 वीं अकादमिक परिषद की बैठक 1 दिसंबर को चाणक्य परिसर में आयोजित की गई। जिसमें अकादमिक परिषद की अंतिम बैठक की तारीख से विश्वविद्यालय में हुई प्रगति और विकास पर चर्चा की गई थी।

विचार और निर्णय के लिए उठाए गए कई एजेंडों में, परिषद ने छात्रों को सम्मानित किए जाने वाले डिग्री और ग्रेड शीट के प्रारूप की सिफारिश की।

परिषद ने उन उम्मीदवारों की सूची पर भी विचार किया और सिफारिश की जिन्होंने सफलतापूर्वक डिग्री प्राप्त कर ली है उन्हें दीक्षांत समारोह के दौरान डिग्री प्रदान की जाएगी ।

संगोष्ठी
प्राचीन भारत की संचार व्यवस्था: विविध आयाम
27 नवंबर, 2019 बुधवार

मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर स्थित कॉन्फ्रेंस हाल में 'प्राचीन भारत की संचार व्यवस्था: विविध आयाम' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपति ने कहा कि वेद, पुराण और उपनिषद में भारतीय संचार व्यवस्था के बहुआयामी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं ।

Virally Induced

डिपार्टमेंट ऑफ जूलॉजी, स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आलोक चंद्र भारती के व्याख्यान का आयोजन

एक भारत श्रेष्ठ भारत पर
व्याख्यानमाला का आयोजन

भारत के विचार को एक राष्ट्र के रूप में मनाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करने जा रहा है, जिसमें विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विभिन्न सांस्कृतिक इकाइयाँ एक–दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करती हैं। जिसमें ''एक भारत श्रेष्ठ भारत–प्रधानानुभूति'' विषय के तहत एक व्याख्यानमाला का 18 दिसंबर 2019 आयोजन किया जाएगा।

इस श्रृंखला में पहला व्याख्यान प्रो. *अष्टतरन* पाल द्वारा दिया जाएगा जो उड़ीसा राज्य पर केंद्रित होगा।

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

मुफ्त चिकित्सा शिविर आयोजन

सामाजिक कार्य विभाग ने बालगंगा, रघुनाथपुर, मोतिहारी मे क्षेत्र की वंचित आबादी के लिए मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया, जहाँ विशेषज्ञों सहित प्रसिद्ध डॉक्टरों द्वारा विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त 1000 से अधिक जरूरतमंदों का इलाज किया गया। शिविर में निशुल्क दवाइयां भी दी गई।

शिविर का उद्घाटन करते हुए, मुख्य अतिथि, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा ने समुदाय मे स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने, समाज के वंचित वर्ग और सभी के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं की समानता सुनिश्चित करने की बढ़ती आवश्यकता पर बल दिया।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

योजना और निगरानी बोर्ड की दूसरी बैठक

विश्वविद्यालय की योजना और निगरानी बोर्ड की दूसरी बैठक 1 दिसंबर को डॉ. अंबेडकर प्रशासनिक भवन में आयोजित की गई । जिसमें योजना और निगरानी बोर्ड के पुनः गठन से संबंधित मामला चर्चा के लिए लिया गया था।

विश्वविद्यालय द्वारा अपने सुचारू कामकाज और कुछ शिक्षण विभागों के स्थानांतरण, विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों और ब्लॉकों के पुनः नामकरण पर चर्चा की गई और उनकी समीक्षा की गई । बैठक में आदर्श वाक्य के साथ विश्वविद्यालय के संशोधित लोगो को भी स्वीकृत किया गया।

वित्तीय, शैक्षणिक और प्रशासनिक मामलों पर बैठक

माननीय कुलपति ने विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण वित्तीय, शैक्षणिक और प्रशासनिक मामलों पर चर्चा करने के लिए स्कूलों के अधिष्ठाता और प्रशासनिक कर्मचारियों की एक बैठक आयोजित की। जिसमें, पिछली बैठक में निर्धारित एजेंडों पर हुई प्रगति, आठ विभागों को गांधी भवन में स्थानांतरित करने, ढांचागत व्यवस्था किए जाने पर चर्चा की गई। विश्वविद्यालय में सतत विकास के लिए एक अंतः विषयी केंद्र की स्थापना के प्रस्तावों और विचारों पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

अमेरिका के प्रो. मैथ्यू स्वैरलॉप ने दिया व्याख्यान

‘उच्च शिक्षा में मिश्रित अध्ययन’

कुलपति प्रो. शर्मा ने शिक्षकों को किया प्रेरित

KEY ELEMENTS OF BLENDED LEARNING?
Frequent personal connection is essential
Fall back plan when technology is unavailable
Sound instructional objectives and pedagogy
Built in differentiation
Increased student engagement

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा ‘उच्च शिक्षा में मिश्रित अध्ययन’ विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। वेस्टर्न कनेक्टिकट यूनिवर्सिटी, अमेरिका के तकनीकी शिक्षा विभाग के प्रो. मैथ्यू स्वैरलॉप ने बतौर मुख्य वक्ता अपने संबोधन में मिश्रित अध्ययन के बारे में बताया कि इस प्रकार की शिक्षा में अध्ययन का कुछ हिस्सा कक्षा में प्रत्यक्ष और कुछ हिस्सा तकनीकी के माध्यम से दूर रहकर भी पूरी की जाती है। यह शिक्षा का एक सशक्त माध्यम है। दुनिया में मिश्रित शिक्षा की शुरुआत सन् 1840 में हुई थी और आज यह तकनीकी क्रांति की वजह से ज्यादा प्रभावी हो चुकी है। मिश्रित शिक्षा के तमाम उदाहरणों को प्रोजेक्टर की सहायता से उपस्थित विद्यार्थियों व शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए उन्होंने सवाल–जवाब के द्वारा उनकी जिज्ञासाओं को भी शांत किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने प्रो. मैथ्यू जैसे अनुभवी विद्वान द्वारा विश्वविद्यालय में आकर विद्यार्थियों व शिक्षकों को व्याख्यान देने पर प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही इस सार्थक और सफल कार्यक्रम के आयोजन के लिए शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. आशीष श्रीवास्तव की प्रशंसा भी की। मिश्रित शिक्षा पर वक्तव्य के क्रम में उन्होंने शिक्षकों को प्रेरित करते हुए अच्छे शिक्षक के गुण–दोषों पर भी चर्चा की। कुलपति ने कहा कि कुछ शिक्षक कक्षा में संवाद बहुत अच्छा करते हैं लेकिन उनके द्वारा विद्यार्थियों को दिया गया ज्ञान 10 साल पुराना होता है जिसे उन्होंने स्वयं पढ़ा हुआ होता है, उसमें वे कुछ भी अद्यतन नहीं करते। कालीदास के कथन और संस्कृत के विभिन्न श्लोकों के माध्यम से समझाते हुए कहा कि वही श्रेष्ठ शिक्षक है जिसे विषय का ज्ञान भी है और अभिव्यक्ति का कौशल भी है। इससे पूर्व शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने प्रो. मैथ्यू का परिचय देते हुए विषय प्रवर्तन किया। इस अवसर पर सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजीव कुमार ने भी उपस्थित शिक्षकों व विद्यार्थियों को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. मनीषा रानी व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. पी. ओंकार ने किया। इस अवसर पर डॉ. सरिता तिवारी, प्रो. अजय कुमार गुप्ता, डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, प्रो. सुनील महावर, डॉ. दिनेश व्यास, डॉ. कनक शर्मा व डॉ. रश्मि श्रीवास्तव समेत बड़ी संख्या में शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कैम्ब्रिज स्कॉलर्स ने प्रो प्रणवीर सिंह द्वारा संपादित पुस्तक का किया प्रकाशन

प्रो. प्रणवीर सिंह, जूलॉजी विभाग, द्वारा संपादित किताब ‘‘तपेदिक और एचआईवी–एड्स के साथ सह–संक्रमण’’ को कैम्ब्रिज स्कॉलर्स, न्यूकैसल, यूनाइटेड किंगडम द्वारा प्रकाशित किया गया है। किताब तपेदिक से संबंधित है। यह इस बीमारी पर सबसे हालिया शोध को शामिल करता है, जो इसके विकास, वैश्विक प्रसार और भारत में वर्तमान परिदृश्य के कालानुक्रमिक इतिहास को उजागर करता है। पुस्तक में मौसम पर जोर देने वाली बीमारी, एचआईवी–एड्स के साथ सह–संक्रमण और अल्पविकसित और आदिवासी आबादी के लिए विशेष संदर्भ के साथ उपन्यास कॉम्बिनेटरियल–थेरेपी पर भी प्रकाश डाला गया है।

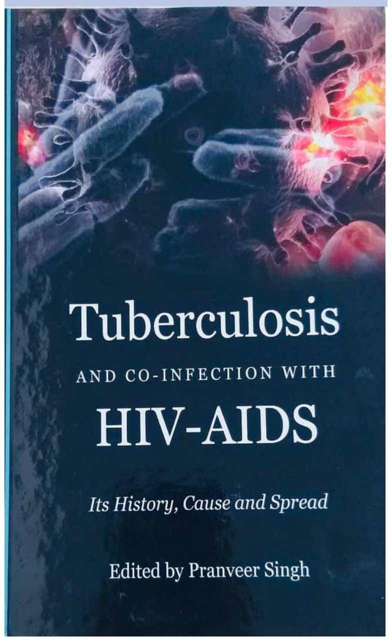
Tuberculosis
AND CO-INFECTION WITH
HIV-AIDS
Its History, Cause and Spread
Edited by Pranveer Singh

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

डेटा एनालिटिक्स पर

राष्ट्रीय कार्यशाला डीएएच–2019

विश्वविद्यालय में ‘‘हडूप के साथ डेटा एनालिटिक्स पर राष्ट्रीय कार्यशाला ’’ की शुरुआत हुई। विभागाध्यक्ष डॉ विकास पारीक ने बताया कि 14 से 18 अक्तूबर तक आयोजित होने वाली यह कार्यशाला केविवि व मोतिहारी अभियंत्रण महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हो रही है । प्रातः विवि के सभागार में कार्यशाला का उद्घाटन विद्या की देवी सरस्वती जी के सम्मुख ज्योति प्रज्वलित कर हुआ । उद्घाटन सत्र में मोतिहारी अभियंत्रण महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो रामचंद्र प्रसाद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। केन्द्रीय विश्वविद्यालय से अपने लगाव का उल्लेख किया व पारस्परिक हित में सहयोग का विश्वास व्यक्त किया । उन्होंने अन्य सभी विषयों पर कम्प्यूटर विज्ञान के पड़ने वाले प्रभावों की बात की व विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएं । कार्यशाला के संयोजक डॉ विपिन कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और हडूप फ्रेमवर्क की खूबियों पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम का संचालन कम्प्यूटर विज्ञान के सहायक प्राध्यापक श्री अतुल त्रिपाठी ने किया । कार्यक्रम में कम्प्यूटर विज्ञान के डॉ सुनील कुमार व शुभम कुमार के

One Week National Workshop
Data Analytics using Had
D A H
(DAH-2019)
Oct 14th - 18th, 2019
Organized
Department o
uter Science a
ndhi C
ation Te
iversity

प्रारंभ में स्वागत वक्तव्य देते हुए विभागाध्यक्ष डॉ विकास पारीक ने प्रो प्रसाद से निरंतर मिल रहे सहयोग की सराहना की। साथ ही विषय विशेषज्ञ श्री आनंद कुमार पांडेय जी का स्वागत किया । डॉ पारीक ने बिग डेटा को नौकरी व कौशल के लिहाज से महत्वपूर्ण बताया । विशिष्ट अतिथि प्रो रामचंद्र प्रसाद ने अलावा रसायन शास्त्र विभाग के डॉ अभिजित , डॉ अनिल कुमार, भौतिकी के डॉ अरविंद ,प्राणीशास्त्र के डॉ अमित रंजन समेत कई शिक्षक उपस्थित थे । विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजीव शर्मा जी ने कार्यक्रम की सफलता के लिए विभाग को शुभकामनायें दी हैं ।

संस्कृत विभाग द्वारा विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

विज्ञान एवं तकनीकी की समसामयिक समस्याओं का समाधान संस्कृत से ही सम्भव

कुलपति ने की अध्यक्षता, प्रति कुलपति प्रो. अनिल राय, विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता व विभागाध्यक्ष रहे उपस्थित

विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा कुलपति प्रो. सजीव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में ‘संस्कृत एवं विज्ञान : विषय, समस्या तथा समाधान’ विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया।

उक्त विषय पर मुख्य वक्ता के रुप में संस्कृत एवं प्राच्य–विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. राम नाथ झा ने अपने व्याख्यान में कहा कि संस्कृत केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं है अपितु समस्त ज्ञान–विज्ञान एवं शोध का आधार है। उन्होंने संस्कृत वाङ्मय को विज्ञान के रुप में प्रमाणित करते हुए समसामयिक परिस्थितियों में वेद एवं उपनिषद् को आधार बनाकर विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में आने वाली समस्त समस्याओं के समाधान में सक्षम सिद्ध किया। प्रो. झा ने संस्कृत वाङ्मय को ‘ताओ ऑफ फिजिक्स’ जैसे नवीन दृष्टि सम्पन्न महत्वपूर्ण ग्रंथों का आधार बताते हुए कहा कि विज्ञान हमारे लिए केवल शोध का विषय नहीं है, अपितु एक समावेशी एवं सतत् विकास से अनुप्राणित जीवन शैली का हिस्सा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. शर्मा ने संस्कृत की वैज्ञानिक परम्परा को आत्मसात करने एवं उसकी चिंतन परंपरा तथा आधुनिक समय में संस्कृत की प्रासंगिकता का प्रचार–प्रसार करने पर विशेष बल दिया। प्रति कुलपति प्रो. अनिल कुमार राय ने भी संस्कृत विभाग की ओर से आयोजित वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न विशेष व्याख्यान के आयोजन हेतु साधुवाद दिया तथा विश्वविद्यालय में संस्कृतमय वातावरण के निर्माण हेतु प्रेरित किया। इससे पूर्व कार्यक्रम के शुरुआत में डॉ. विश्वेश द्वारा मंगलाचरण का पाठ किया गया। संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा ने व्याख्यान में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. अनिल कुमार गिरि ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर प्रो. राजीव कुमार, प्रो. अजय कुमार गुप्ता, डॉ. बृजेश पाण्डेय, डॉ. बबलू पाल, डॉ. विश्वजित बर्मन आदि शिक्षक, जनसम्पर्क अधिकारी, शेफालिका मिश्रा, विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो शर्मा को मिला प्रतिष्ठित नेशनल इमिनेंट एकेडमिशियन अवॉर्ड

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० संजीव कुमार शर्मा को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी नेशनल इमिनेंट एकेडमिशियन अवार्ड 2019' से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड उन्हें दिल्ली में चाणक्य फाउंडेशन की ओर से आयोजित समारोह में पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राजमंत्री रामेश्वर तेली, यूजीसी के सदस्य किरण हजारिका और आचार्य गुज्जा गोपाल रेडी सहित अन्य उपस्थित थे।

to
PADMA VIBHUSHAN
MURLI MANO
SHRI
Chief

हाल में ही कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा को शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान के लिए 'नेशनल एक्सेलेंस अवॉर्ड 2019' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लदंन द्वारा प्रदान किया गया, जो गत 19 वर्षों से शिक्षा तथा सामाजिक हित में कार्यरत प्रमुख संगठनों में से एक है। केविवि के विभिन्न अधिकारी, शिक्षकगण अथवा विद्यार्थियों ने प्रो० शर्मा को शुभकामनाएँ दी और कहा कि कुलपति को उक्त अवार्ड मिलने से संस्थान की राष्ट्रीय स्तर पर गरिमा बढ़ी है।

शैक्षणिक भ्रमण पर सिलीगुड़ी पहुंचे विद्यार्थी

Mahatma Gandhi Central University, Bihar
Department of Management Sciences
MBA (2018-20)
Industrial Visit at NHPC Ltd
Siliguri (Region), West-Bengal

विश्वविद्यालय के एमबीए तृतीय सत्र के विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण के तहत नेशनल हाइड्रो पावर कार्पोरेशन लिमिटेड, सिलिगुड़ी के दौरे पर हैं। रविवार को दोपहर 1 बजे से प्रबंधन विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अल्का लल्हाल व अरुण कुमार के मार्गदर्शन में एमबीए तृतीय सत्र के विद्यार्थी जिला स्कूल स्थित विवि के अस्थायी परिसर से बस द्वारा रवाना हुए। सोमवार को विद्यार्थियों ने पश्चिम बंगाल के कालीझोरा स्थित एनएचपीसी के तीस्ता प्रोजेक्ट का निरीक्षण किया और उपयोगी जानकारियां हासिल की। आगे विद्यार्थियों के गंगटोक जाने की योजना है। प्रबंधन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. पवनेश कुमार ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह शैक्षणिक भ्रमण एमबीए के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का हिस्सा है। इससे विद्यार्थियों को न सिर्फ एनएचपीसी की कार्यप्रणाली के बारे में जानने का अवसर मिलेगा बल्कि वहां की संस्कृति व वातावरण से भी विद्यार्थी परिचित होंगे। यह भ्रमण विद्यार्थियों के करियर बनाने में भी मददगार साबित होगा।

विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद की बैठक में अकादमिक परिषद तथा योजना और निगरानी बोर्ड की सिफारिशों पर चर्चा की गई।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकात्म मानव दर्शन' विषय पर हुई संगोष्ठी

जो जन्मा है, वो 'खाएगा' डॉ. कर्ण

विश्वविद्यालय में गुरुवार को 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकात्म मानव दर्शन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। विद्यान्त हिंदू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ के आचार्य डॉ. विजय कुमार कर्ण ने बतौर मुख्य वक्ता अपने संबोधन में दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी ने ''पूंजी और श्रम दोनों के समेकित बेल से ही सम्यक विकास हो सकता है,'' इस अवधारणा को जिया था। उनका कहना था कि केवल श्रम से विकास ठीक से नहीं हो सकता और केवल पूंजी के आधार पर भी विकास की संरचना ठीक नहीं होगी। इसलिए श्रम और पूंजी का एक सटिक तालमेल होना आवश्यक है। उनका मानना था कि कमाने वाला खाएगा या जो कमाने वाला है वह भूखा रहेगा और केवल कमाने की व्यवस्था पैदा करने वाला ही प्रसन्न रहेगा, यह व्यवस्था नहीं चल पाएगी। इसलिए जो 'जन्मा है वो खाएगा' और तब तक खाएगा जब तक कि वह कमाने योग्य न हो जाए या वह रोजगार के अवसर न पा जाए। तब तक जो व्यक्ति अर्जित कर रहा है, उसके अर्जन में ही उसकी भी हिस्सेदारी है। रोटी, कपड़ा और मकान के नारे के साथ उन्होंने पढ़ाई और दवाई को भी जोड़ा और उससे भी बढ़कर व्यक्ति का स्वाभिमान कैसे विकसित हो! सब कुछ प्राप्त हो जाने के बाद भी वह दीन–हीन की तरह ही चिंतन न करता रहे, इसके बारे में भी उन्होंने सोचा। दीनदयाल जी के चर्चित 'एकात्म मानव दर्शन' के बारे में कहा कि वास्तव में यह औपनिषदिक दर्शन है जिस पर दीनदयाल जी ने जोर दिया। सभी जीवों में मैं हूं और सभी जीव मुझमें हैं, यह उपनिषद का बोध वाक्य है। इस बोध वाक्य से ही संसार को देखने की एक दृष्टि, जीवों को देखने की एक दृष्टि, मनुष्य को किस रुप में देखा जाए उसकी एक दृष्टि का नाम एकात्म मानव दर्शन है। जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित संगोष्ठी में अपने अध्यक्षीय संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि दीनदयालय जी के भाषण बहुत ही व्यवस्थित व पुनरावृत्ति के दोष से दूर रहे हैं। उनके विचार मौलिक हैं। वह औपनिषदिक परंपरा का अनुसरण करते हुए सनातन तत्वों को हमारे समक्ष उद्घाटन करते हैं लेकिन उनकी प्रस्तुति मौलिक है। इसीलिए यह एकात्म दर्शन है। प्रस्तुति की मौलिकता दीनदयाल जी में निरंतर मिलती है। इससे पूर्व इस संगोष्ठी के संयोजक व जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ. पवनेश कुमार ने सभी अतिथियों व संगोष्ठी कक्ष में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए विषय का प्रवर्तन किया। संगोष्ठी का संचालन मीडिया अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. उमा यादव व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. साकेत रमन ने किया। इस अवसर पर प्रो. राजीव कुमार, प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी, प्रो. आशीष श्रीवास्तव, प्रो. सुनील महावर, डॉ. सपना सुगंधा आदि शिक्षक, जनसम्पर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा समेत बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

SAHARANPUR FURNITURE
EXCHANGE
REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

मीडिया अध्ययन विभाग के छात्र–छात्राओं ने टाउन हॉल में लगे राष्ट्रीय व्यापार मेला–19 का स्थानीय शैक्षणिक भ्रमण किया। राष्ट्रीय व्यापार मेला में मीडिया के छात्र–छात्राओं ने मेले में लगे विविध स्टालों का अवलोकन किया एवं शिक्षकों के निर्देशन में रिपोर्टिंग के विभिन्न आयामों से परिचित हुए।

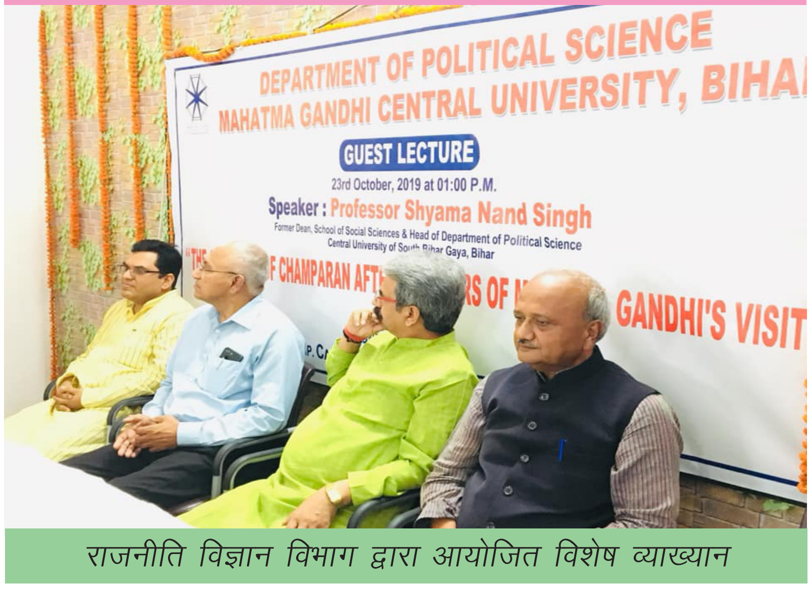
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
MAHATMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY, BIHA
GUEST LECTURE
23rd October, 2019 at 01:00 P.M.
Speaker : Professor Shyama Nand Singh
Former Dean, School of Social Sciences & Head of Department of Political Science
Central University of South Bihar Gaya, Bihar
F CHAMPARAN AFT
RS OF
GANDHI'S VISIT

राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान

विद्यार्थियों को मिली क्रिकेट, बैडमिंटन व बॉलीबाल कोर्ट की सुविधा

क्रीड़ा संकुल का हुआ उद्घाटन

खेल सुविधाओं की उपलब्धता और विद्यार्थियों के चतुर्मुखी विकास पर दिया जोर

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के जिला स्कूल स्थित 'प्रधानाचार्य बंगला' परिसर में कुलपति प्रो.संजीव कुमार शर्मा के नेतृत्व में क्रीड़ा संकुल का उद्घाटन किया गया। प्रो.शर्मा ने प्रति कुलपति प्रो. अनिल कुमार राय, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो. आनंद प्रकाश, प्रभारी, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ डॉ. पवनेश कुमार, ओएसडी प्रशासन, डॉ. पद्माकर मिश्र व प्रभारी, खेल अधिकारी, डॉ. दिनेश व्यास आदि वरिष्ठ अधिकारियों, शिक्षकों व विद्यार्थियों की उपस्थिति में क्रीड़ा संकुल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर क्रिकेट के अलावा बैडमिंटन व बॉलीबॉल कोर्ट का उत्साहपूर्ण वातावरण में उद्घाटन किया गया। प्रो. शर्मा प्रतीकात्मक रूप से हाथों में क्रिकेट का बल्ला थाम क्रिकेट पिच पर उतरे और अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, प्रो.आनन्द प्रकाश ने गेंदबाजी की। प्रो. शर्मा ने अपने सम्बोधन में क्रीड़ा संकुल के उद्धाटन पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि विद्यार्थियों के लिए आगे भी अन्य खेल सुविधाएं बहाल करने का प्रयास किया जाएगा। आगे कहा कि अपने सीमित संसाधनों के बावजूद विवि प्रशासन अध्ययन–अध्यापन का वातावरण विकसित करने के साथ–साथ विद्यर्थियों के चतुर्मुखी विकास के लिए यथासम्भव प्रयास करता रहेगा। प्रति कुलपति प्रो.राय, प्रो. आनन्द प्रकाश, डॉ. पवनेश कुमार व डॉ. पद्माकर मिश्र ने भी क्रीड़ा संकुल के उद्घाटन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रभारी, खेल अधिकारी डॉ. दिनेश व्यास व विद्यार्थियों को बधाई दी। इस अवसर पर विवि के कुलानुशासक डॉ. बृजेश पाण्डेय, प्रो. सुनील महावर, राम लाल बगड़िया समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, गैर शैक्षणिक अधिकारी–कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मीडिया शोध पर विशेष व्याख्यान

18 अक्टूबर को विश्वविद्यालय में मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा मीडिया शोध के विविध आयाम पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान की विशेषज्ञ वक्ता गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा के जनसंचार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. बन्दना पांडेय थी।

प्रो. बंदना पांडेय ने व्याख्यान के दौरान मीडिया रिसर्च की नई और अधिनूतन प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला साथ ही संपूर्ण भारत में मीडिया शिक्षण के परिदृश्य से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि तेजी से खबरों को पेश करने की जरूरत ने एक गलाकाट प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया। आपको स्वयं को करियर की चुनौतियों के अनुरूप तैयार करना होगा। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से उन्होंने कहा कि आप सूचनाओं के सुपर हाईवे पर हैं परंतु कौन सी सूचना चुननी है यह महत्वपूर्ण है, भाषा और सामग्री की गरिमा बनाकर रखना जरूरी है और शुचितापूर्ण पत्रकारिता देश की जरूरत है। मीडिया में रिसर्च के नए–नए आयाम शामिल हुए हैं। रिसर्च बेस्ड पत्रकारिता आज के समय की जरुरत है। एकेडमिक रिसर्च में सैद्धांतिक आधार को शामिल करना जरूरी है, नई थ्योरी और नए ट्रेंड को शामिल कर भारत में संचार शोध को अधिक उपयोगी बनाने पर ध्यान देना होगा।

प्रोफेसर पांडेय ने विश्वविद्यालय में हो रहे नवाचारों व रचनात्मक गतिविधियों के लिए कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा को साधुवाद दिया। व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय का यह नया परिसर अब दीनदयाल उपाध्याय परिसर के रूप में जाना जाएगा। आगे उन्होंने बताया कि हमें अकादमिक साहचर्य की संस्कृति को विकसित करना चाहिए और शोध को अंतर अनुशासनिक बनाने के लिए प्रयास जरूरी है। घटनाओं के पीछे के कारण की तलाश और हमेशा ''क्यों?'' और प्रश्न की प्रवृत्ति का विकास जरूरी है। कुलपति ने मीडिया अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों को कहा कि मेरी शुभकामनाएं है कि भारतीय संचार एवं परंपरा पर शोध की जब चर्चा हो तो यह विभाग जाना जाए। व्याख्यान में मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार भगत, सह–प्राध्यापक अंजनी कुमार झा, सह–प्राध्यापक प्रशांत कुमार, सहायक प्राध्यापक सुनील घोडके, उमा यादव समेत अन्य विभाग के प्राध्यापक, विद्यार्थी एवं शोधार्थी मौजूद थें, वहीं व्याख्यान का संयोजन सहायक प्राध्यापक परमात्मा मिश्रा ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्राध्यापक साकेत रमण ने दिया।ज्ञात हो कि मोतिहारी स्थित जिला स्कूल परिसर में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय अस्थाई रूप से संचालित हो रहा है तथा उगम पांडेय कॉलेज रोड में निदान हॉस्पिटल के समीप दीनदयाल उपाध्याय परिसर में मीडिया अध्ययन विभाग का संचालन होता है।

भ्रामक विज्ञापनों से उपभोक्ताओं को मिलेगी राहत, – प्रो. मिश्रा

'उपभोक्ता संरक्षण एवं कल्याण' विषय पर सेमीनार

NATIONAL SEMINAR ON
CONSUMER PROTECTION AND WELFARE : ISSUES AND CHALLENGES
October 14-15, 2019
MAHATMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY
Centre for Consumer Studies
Department of Consumer Affairs
Affairs, Food and Public Distribution

विश्वविद्यालय और उपभोक्ता अध्ययन केंद्र, आईआईपीएए, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'उपभोक्ता संरक्षण एवं कल्याण' विषय पर दो दिवसीय सेमीनार हुआ। मोतिहारी स्थित वी.के. गार्डन के हॉल में सेमीनार के पहले दिन उपभोक्ता अध्ययन केंद्र, आईआईपीए, नई दिल्ली के प्रोफेसर व संयोजक प्रो. सुरेश मिश्रा ने बतौर मुख्य अतिथि अपने संबोधन में नए उपभोक्ता संरक्षण कानून की खूबियों को सिलेसिलेवार ढंग से बताया। उन्होंने कहा कि पुराने कानून की कमियों को दूर करते हुए नए कानून में उपभोक्ताओं के हित में कई कदम उठाए गए हैं। अब टीवी या अन्य किसी माध्यम से भ्रामक विज्ञापन के द्वारा उपभोक्ताओं से छल करने पर भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया है। उपभोक्ता अगर किसी उत्पाद को खरीदता है और उसे संबंधित कंपनी से कोई शिकायत है तो वह घर–बैठे ऑनलाइन अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये बताया कि गरीब और अशिक्षित उपभोक्ता कंपनियों की बड़ी ठगी या छल के शिकार होकर भी सह लेते हैं जबकि पढ़े–लिखे उपभोक्ताओं में से कुछ ऐसी शिकायतें भी सामने आती है जिसमें मामला बहुत ही सामान्य रहता है। उन्होंने विश्वविद्यालयों, पढ़े–लिखे लोगों और संबंधित संस्थानों से इस तरह के आयोजन करके गरीब–अमीर हर वर्ग के उपभोक्ताओं को निरंतर जागरुक करते रहने का आह्वाहन किया। फकीर मोहन विश्वविद्यालय, उड़ीसा की प्रो. गीतांजलि दास ने अपने संबोधन में कहा कि उपभोक्ता संरक्षण एवं कल्याण विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालयों में इस तरह के आयोजन से युवाओं को इस विषय पर जागरुक करने में मदद मिलेगी। ए. एन. कॉलेज, पटना के प्राचार्य प्रो. एस. पी. शाही ने अपने संबोधन में भ्रामक फोन कॉल्स के जरियें उपभोक्ताओं के साथ हो रही धोखाधड़ी की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि केवल अशिक्षित और कमजोर वर्ग के लोग ही नहीं पढ़े–लिखे लोग भी इनके शिकार हो रहे हैं। उन्होंने इस दिशा में जागरुकता कार्यक्रम संचालित करने की आवश्यकता बताई। ग्लोबलाइजेशन और डिजिटलाईजेशन की चर्चा करते हुए कहा कि जो सामान पहले कहीं सस्ता तो कहीं महंगा बिकता था, तकनीकी विकास के कारण अब हर जगह समान मूल्य पर सामान उपलब्ध हैं। प्रो. शाही ने इस महत्वपूर्ण विषय पर आयोजन के लिए केविवि और उपभोक्ता अध्ययन केंद्र, आईआईपीएए, नई दिल्ली की प्रशंसा की। दिल्ली प्रौद्यागिकी विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. एस.एस.खनका ने अपने संबोधन में वैश्विक परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था और उपभोक्ता संरक्षण कानून, 1986 की तुलना में नए कानून के बारे में विस्तार से व बहुत ही रोचक ढंग से जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने संदेश में इस सेमीनार में सहभागी अतिथियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों को शुभकामनाएं दी। प्रो. शर्मा सेमीनार के दूसरे दिन समापन समारोह की अध्यक्षता करेंगे। इस अवसर पर ओएसडी, प्रशासन डॉ. पद्माकर मिश्र ने कहा कि ऐसे महत्वपूर्ण विषयों पर विश्वविद्यालय प्रशासन आगे भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के प्रयास करेगा। वहीं अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. आनंद प्रकाश ने उपभोक्ताओं से किसी भी उत्पाद को सोच–समझकर खरीदने का आह्वाहन किया। इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से शिक्षकों, विद्यार्थियों व शोधार्थियों से प्राप्त शोध सार की स्मारिका का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सपना सुगंधा ने किया। विषय प्रवेश के साथ स्वागत वक्तव्य सेमीनार के संयोजक डॉ. पवनेश कुमार ने दिया। आयोजन सचिव, राम लाल बगड़िया ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर प्रो. आशीष श्रीवास्तव, प्रो. राजीव कुमार, प्रो. अजय कुमार गुप्ता, प्रो. सुनील महावर, डॉ. अल्का लल्हाल, डॉ. स्वाति कुमारी, अवनीश कुमार, समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहे।

आधुनिक शिक्षाः मौलाना आजाद की विरासत विषय पर सेमिनार का आयोजन

आजाद की नीतियों पर दिखता है गांधी का असर : पद्मश्री राजपूत

11 वीं राष्ट्रीय शिक्षा दिवस एवं मौलाना अबुल कलाम आजाद की 131वीं जयंती के पुनीत अवसर पर महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय द्वारा 'आधुनिक शिक्षाः मौलाना आजाद की विरासत' विषय पर सेमिनार का आयोजन सोमवार को जिला स्कूल कैम्पस में किया गया। इसमें देशभर से आये प्राध्यापकों और शोधकर्ताओं ने मौलाना आजाद की शैक्षिक विरासत से जुड़े विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये।

सेमिनार की अध्यक्षता महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा, स्वागत भाषण प्रतिकुलपति डॉ. अनिल कुमार राय, विषय प्रवेश शिक्षा विभाग के संकायाध्यक्ष डॉ. आशीष श्रीवास्तव एवं कार्यक्रम का संयोजन शिक्षा विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. कनक शर्मा ने किया। सेमिनार में मंच संचालन सहायक प्राध्यापिका डॉ. मनीषा रानी ने किया।

सेमिनार का उद्घाटन मुख्य अतिथि एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक पद्मश्री जगमोहन सिंह राजपूत, विशिष्ट अतिथि रेलवे बोर्ड के पूर्व कार्यकारी निदेशक प्रेमपाल शर्मा, मुख्य वक्ता भूपेंद्र नरायन मंडल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति रिपुसूदन श्रीवास्तव ,महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा एवम प्रति कुलपति डॉ. अनिल कुमार राय ने माँ शारदे की चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।

मुख्य अतिथि पद्मश्री जगमोहन सिंह राजपूत ने सेमिनार को सम्बोधित करते हुए कहा कि मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एक दशक से अधिक वर्षों तक भारत के शिक्षा मंत्री रहे। देश मे उस समय साक्षरता दर 20: थी। देश मे हालात सामान्य नही थे। मौलाना आजाद की शिक्षा नीतियों पर महात्मा गांधी का ब्यापक असर है। उनके ब्यक्तित्व में अध्ययनशील बने रहने के कारण बहुत बड़ी दूर दृष्टि थी। शिक्षा को लेकर संवेदनहीनता की शुरुआत साठ से सत्तर की दशक से शुरू हुई। 1951 में दिल्ली में देश के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि जो विश्वविद्यालय गए वह खेतों पर लौटकर नहीं आये। कृषि को लेकर उनकी सजगता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता कि वह इस विषय पर चिंतित थे कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले लोग गांवों से दूर हो रहे हैं। गांवों के विकास में विश्वविद्यालयों को भी सहयोग करना चाहिए। कोठारी कमीशन के द्वारा तत्कालीन समय में शिक्षा की वास्तविक परिस्थितियों से अवगत कराया गया था। आज भी देश मे 62: लोगों के पास सरकारी स्कूल के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

विशिष्ठ अतिथि रेलवे बोर्ड के पूर्व कार्यकारी निदेशक प्रेमपाल शर्मा 'ने कहा कि मौलाना आजाद ने भारत मे आधुनिक शिक्षा की शुरुआत की। उन्होंने आईआईटी, आईआईएम, ललित कला अकादमी एवम साहित्य अकादमी सहित कई संस्थानों को स्थापित किया। शिक्षा को लेकर उनकी दृष्टि उदार थी। वर्तमान में शिक्षा को मातृभाषा केंद्रित बनाने की जरूरत है। निज भाषा में प्राप्त किया हुआ ज्ञान आपको हमेशा विवेकपूर्ण बनाता है। महात्मा गांधी ने भी तत्कालीन समय मे अपनी भाषा को सुदृढ करने की बात की थी। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के अवसर पर उन्होंने मालवीय जी से भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का आग्रह 1916 में किया था। हमारा वैदिक विज्ञान भी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ था।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए बीएनमयू के पूर्व कुलपति रिपुसूदन श्रीवास्तव ने कहा कि मौलाना आजाद राजनीतिक होने के साथ साथ विद्वान भी थे। उनकी लोकप्रिय पुस्तक 'इंडिया विंस फ्रीडम' ने भारत स्वतंत्रता संग्राम की सम्पूर्ण जानकारी मिलती है। देश की राजनैतिक परिस्थितियों ने उनकी नीतियों को लागू नहीं होने दिया। शिक्षा विषय का समवर्ती सूची शामिल होने के कारण तत्कालीन समय मे केंद्र और राज्य दोनों के बीच फंसकर रह गया। साथ ही राज्यों के मानक राजनैतिक थे इसलिए भी केंद्रीय नीतियां लागू नहीं हो पाई। महात्मा गांधी हमेशा से बुनियादी शिक्षा पर विशेष ध्यान देते रहे, इसी के फलस्वरूप मौलाना आजाद ने सरकारी विद्यालयों में एकरूपता की बात की थी। लगभग पचास वर्ष पूर्व मुजफ्फरपुर के नजदीक में तुर्की बुनियादी शिक्षा का बड़ा केंद्र था। वित्तहीन परिवारों के बच्चों को वहां रोजगारपरक शिक्षा दी जाती थी। मौलाना आजाद का मानना था हमसब को शिक्षा के प्रति अपनी जागरूकता बढाने की जरूरत है।

सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा कि आधुनिक शिक्षा में मौलाना आजाद का योगदान सराहनीय है। उन्होंने विभाग के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम हमारे लिए आगे बढ़ने के अवसर हैं। जैसा हम सही समझे उसे करना चाहिए।

प्रथम तकनीकी सत्र का संचालन सामाजिक विज्ञान संकाय के अध्यक्ष प्रो. राजीव कुमार ने किया एवम सह संचालक की भूमिका समाज कार्य विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दिनेश व्यास ने निभाई । इस सत्र में सात शोधपत्र प्रस्तुत किये गए। वहीं दूसरे सत्र का संचालन विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक डॉ. नरेंद्र कुमार आर्या एवम सहसंचालन गांधी अध्ययन विभाग के सह आचार्य युगल दधीच ने किया। इस सत्र में 8 लोगों ने शोध पत्र प्रस्तुत किया। दोनो सत्रों में कुल 15 शोधपत्र प्रस्तुत किये गए।

सेमिनार के समापन सत्र के मुख्य अतिथि आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. ज्ञानदेव मनी त्रिपाठी उपस्थित थे। इस सेमिनार के आयोजन में शिक्षा संकाय की सहायक प्राध्यापिका डॉ रश्मि श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक डॉ पाथलोथ ओमकार, अंगद, रंजय गणेश, अलोकिता, इंदुबाला, अंकिता, तूलिका, कंचन, नूतन, नवीन, संजीव,रूपेश एवं रंजन सहित कई शोधार्थी विद्यार्थियों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

Department of Educational Studies
School of Education
INAUGURAL SESSION

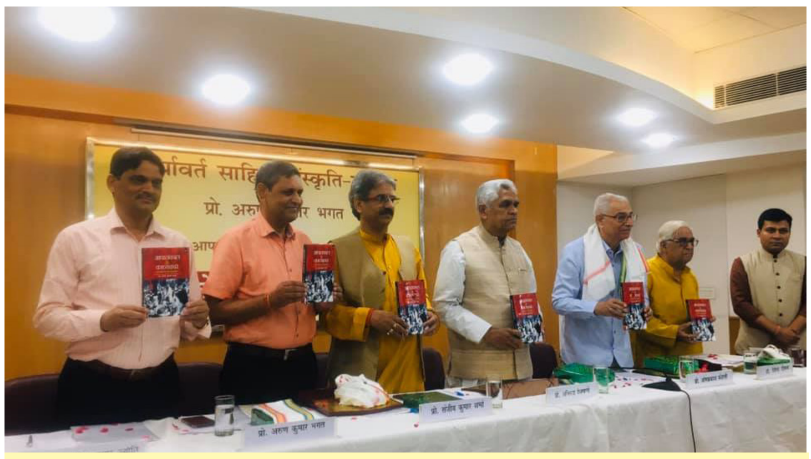

आर्यावर्त साहित्य– संस्कृति–संस्थान, नयी दिल्ली, द्वारा आयोजित समारोह में प्रो० अरुण कुमार भगत की आपातकाल विषय पर तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो० संजीव कुमार शर्मा ने की। समारोह में आरएसएस के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख अनिरुद्ध पाण्डे, गुजरात के पूर्व राज्यपाल प्रो. ओमप्रकाश कोहली, के साथ मोतिहारी मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल के पूर्व निर्देशक डां देवेन्द्र दीपक उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय में रैमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता व जलपुरुष के नाम से विख्यात राजेंद्र सिंह के साथ कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा

प्रशिक्षु विपणन प्रबंधक के रूप में चयनित

9 लाख के पैकेज पर स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया में चयन

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र अवनीश झा का स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया में 9 लाख रुपये वार्षिक पैकेज पर प्रशिक्षु विपणन प्रबंधन पद पर चयन हुआ है। ट्रेनिंग के दौरान इन्हें 4 लाख रुपये वार्षिक का पैकेज मिलेगा। प्रबंधन विभाग के अवनीश की इस सफलता पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने प्रसन्नता जताते हुए इसे विश्वविद्यालय समेत पूरे चम्पारण के लिए सम्मान की बात कही। प्रो. शर्मा ने अवनीश की इस सफलता के लिए उन्हें, उनके माता–पिता व गुरुजनों को बधाई दी और विश्वविद्यालय के अन्य छात्रों को इससे प्रेरणा लेने की बात कही। प्रबंधन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. पवनेश कुमार ने अवनीश को बधाई देते हुए कहा कि अवनीश एक परिश्रमी और अनुशासित विद्यार्थी के तौर पर जाने जाते रहे हैं। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अलावा इनका केनरा बैंक में भी चयन हो चुका है। यह सफलता उनके परिश्रम और विभाग के अध्यापकों के कुशल मार्गदर्शन का परिणाम है। प्रबंधन विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. सपना सुगंधा, असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ. अल्का लल्हाल, डॉ. अभिजीत विश्वास और अरुण कुमार ने भी अवनीश की इस सफलता पर प्रसन्नता जताते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। पश्चिम चम्पारण के बड़हरवा गांव के निवासी श्री मधुकांत झा के पुत्र अवनीश की सफलता पर उनके माता–पिता, भाई–बहन, मित्रों समेत पूरे विवि परिवार में खुशी एवं उत्साह का माहौल है।

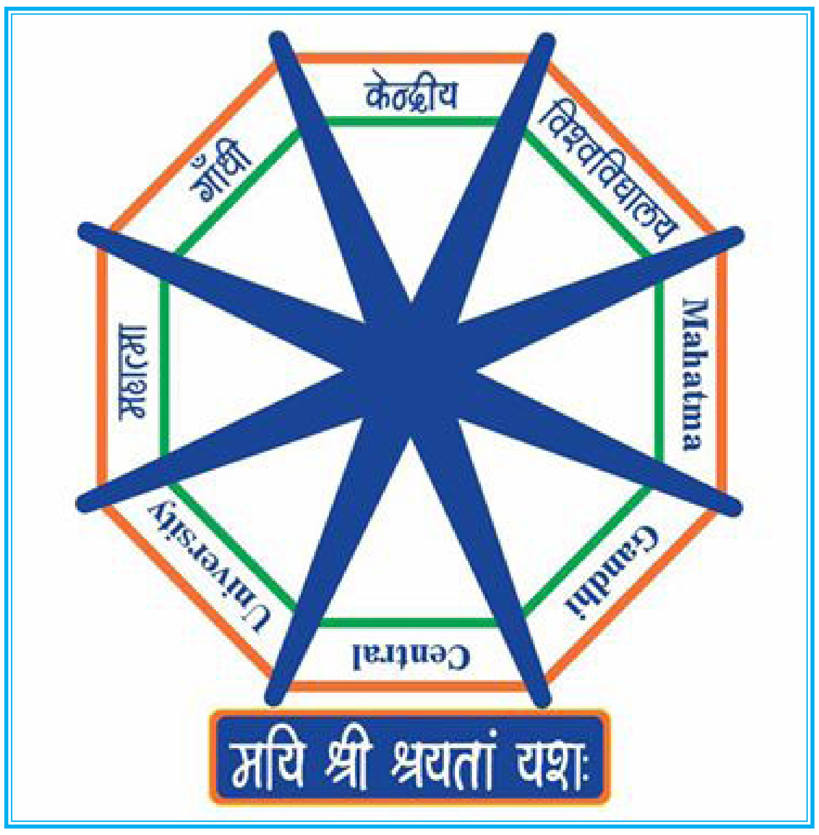

विश्वविद्यालय का प्रेरणादायक प्रतीक चिन्ह जो ऋग्वेद के श्रीसूक्त से उद्धृत है। इसका अर्थ है– 'मुझे समृद्धि, नाम और प्रसिद्धि का आशीर्वाद है।' समृद्धि केवल धन और संपत्ति के अधिग्रहण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समग्र मानव विकास सम्मिलित है, जो वास्तव में किसी भी विश्वविद्यालय का प्राथमिक दायित्व है। एक ज्ञान समाज में, समृद्धि ज्ञान के बिना नहीं हो सकती है और समृद्धि के बिना नाम और प्रसिद्धि के लिए तरसना व्यर्थ है।

केविवि व भारतीय वाणिज्य संघ के सौजन्य से अखिल भारतीय स्तर की परीक्षा

'कॉमेक्स 2019' परीक्षा का आयोजन

विजयी प्रतिभागियों को मिले नगद पुरस्कार

अधिष्ठाता व विभागाध्यक्ष ने दी शुभकामनाएं

विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग द्वारा भारतीय वाणिज्य संघ के सौजन्य से कॉमेक्स 2019 परीक्षा का आयोजन किया गया। इस परीक्षा में बीकॉम व एमकॉम के परीक्षार्थियों ने भाग लिया। यह परीक्षा पूर्ण रुप से पेपरलेस थी, जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को पहली बार सहभागिता का अवसर मिला। विद्यार्थियों ने अपने मोबाइल पर एप्प के माध्यम से यह परीक्षा दी। विजयी प्रतिभागियों को नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। वाणिज्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. शिवेंद्र सिंह इस परीक्षा के संयोजक रहे। वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय के अधिष्ठाता, डॉ. पवनेश कुमार व वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष डॉ. शिरिष मिश्रा ने विभाग के विद्यार्थियों द्वारा इस परीक्षा में सहभागिता पर प्रसन्नता व्यक्त की करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी।

One Week National Workshop on
DAH-2019
संगोष्ठी

मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी 'महात्मा गांधी की पत्रकारिता की प्रासंगिकता' की तस्वीरें

तीन हजार एक दीपकों से जगमग हुआ परिसर

बनायी रंगोली

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विश्वविद्यालय परिसर ईकाई के कार्यकर्ताओ ने जिला स्कूल परिसर मे 3001 मिट्टी के दीये जलाए। वहीं परिसर में कई स्थानों पर रंगोली भी बनायी।

विश्वविद्यालय परिसर ईकाई के अध्यक्ष कौशर जहांगीर ने बताया कि दीपावली हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण त्यौहार है। इस उत्सव में हमारे पूर्वज प्रकृति का संरक्षण को ध्यान में रखकर ही कोई उत्सव मनाते थे, शुद्ध देसी एवं तीसी के तेल और कुम्हार द्वारा निर्मित मिट्टी के दीए जलाते थे, जिससे प्रकृति को नुकसान नहीं हो बल्कि फायदा ही हुआ करता था। ऐसे भी हमारा देश प्राकृतिक पूजक देश रहा है लेकिन आज की आधुनिकता हमारी संस्कृति का नाश कर रही है। जिस तरह से आज लोग उत्सव चकाचौंध भरी मना रहा है चाइनीज लाइट वगैरह का उपयोग कर उससे हमारा नुकसान ही हो रहा है। हमारे लोग अपनी संस्कृति के अनुसार और इको फ्रेंडली उत्सव मना रहे है। इसी उद्देश्य से दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

जहांगीर ने बताया कि अपनी भारतीय परंपरा कितनी अद्भुत रही है कि जब हम लोग कार्यक्रम में 3001 दीपक जला रहे थे तब ओमकार बनाकर दीपक जलाएं एवं जगह–जगह रंगोली बनाए। उस वक्त परिसर की खूबसूरती देखने लायक थी। आज समाज में सभी को दीपावली देसी तरीके से मनाना चाहिए।

कार्यक्रम में विशेष रूप से समाज कार्य विभाग के प्रमुख डॉ विजय कुमार शर्मा,समाज कार्य विभाग के सहायक प्राध्यापक दिग्विजय फुकन और राजनीतिक विज्ञान के सहायक प्राध्यापक ओम प्रकाश गुप्ता सहित कई छात्र छात्राएं मौजूद थे।

बीटेक का इंडक्शन कार्यक्रम

विश्वविद्यालय में बीटेक कम्प्यूटर विज्ञान प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इंडक्शन कार्यक्रम का समापन हुआ । कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा ने की। प्रारंभ में विभाग के अध्यक्ष डॉ विकास पारीक ने संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की व सभी अतिथियों का स्वागत किया ।

इस अवसर पर कुलपति प्रो शर्मा ने विद्यार्थियों को जीवन के लिए उपयोगी सूत्र दिए । उन्होंने प्रश्नोपनिषद का उदाहरण देते हुए समझाया कि सही प्रश्न पूछने की क्या अहमियत है । उन्होंने बीटेक को एक विशिष्ट पाठ्यक्रम बताते हुए अपनी शुभकामनाएँ दी।

इस अवसर पर निबंध लेखन व अंग्रेजी कौशल के विजेताओं के नाम भी घोषित किये गये । कार्यक्रम में संकाय के अध्यक्ष प्रो अरुण कुमार भगत, प्रो सुनील महावर, डॉ पवनेश कुमार व अन्य शिक्षक एवं विभाग के विद्यार्थी उपस्थित थे ।

पाठ्यक्रम में शामिल हो आपातकाल का अध्ययन

विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग के डीन व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अरुण कुमार भगत द्वारा संपादित आपातकाल के काव्यकार, आपातकाल के संस्मरण और डॉक्टर देवेंद्र दीपक का आपातकालीन साहित्यः दृष्टि और मूल्यांकन पुस्तक का लोकार्पण साहित्य अकादमी सभागार में हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख प्रोफेसर अनिरुद्ध देशपांडे, गुजरात के पूर्व राज्यपाल प्रोफेसर ओमप्रकाश कोहली, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के पूर्व निदेशक डॉ. देवेंद्र दीपक, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने पुस्तकों का लोकार्पण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अनिरुद्ध देशपांडे ने कहा कि सत्ता प्रेमियों ने आपातकाल का समर्थन किया था इस वजह से अभी तक किसी पाठ्यक्रम में आपातकाल विषय नहीं लाया गया है। आज के छात्रों को आपातकाल के बारे में पढ़ना चाहिए। उन्होंने यह भी सलाह दी कि आपातकाल के पीछे की राजनीतिक को भी शोध के जरिए पुस्तकों में लाना चाहिए। क्योंकि आपातकाल की लड़ाई भारतीय इतिहास के स्वतंत्रता की दूसरी लड़ाई थी जो जनता के बाद अपने लोगों के खिलाफ लड़ी गई। प्रोफेसर ओमप्रकाश कोहली ने कहा कि आपातकाल की पूरी जानकारी होना जरूरी है इसलिए छात्रों को भी आपातकाल पर पढ़ना चाहिए। देवेंद्र दीपक ने कहा कि आपातकाल पर बहुत लिखा गया है लेकिन बहुत कुछ सामने नहीं आया है इसलिए से आगे लाने की जरूरत है। इस मौके पर प्रोफेसर अरुण कुमार भगत ने बताया कि आपातकाल पर 24 वर्षों से कार्य करते हुए अभी तक उन्होंने 12 पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने कहा कि वामपंथ और कांग्रेस के गठबंधन की वजह से आपातकाल विषय पर विश्वविद्यालयों में शोध नहीं हो पाया इसलिए इस पर अब अध्ययन व शोध के लिए पीठ की स्थापना होनी चाहिए। इस अवसर पर आर्यावर्त साहित्य संस्कृत संस्थान की ओर से साहित्यकार रामशरण गौड़, डॉ. वेद व्यथित, डॉ. मालती, विनोद बब्बर, संजीव सिन्हा समेत 11 लोगों को सम्मानित किया गया।

धनतेरस की संध्या महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में दीपोत्सव का आयोजन किया गया और दीप जला कर एक इतिहास रचा गया

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

''आखिर कब तक तुम झुठलाओगी?''

कब तक तुम झुठलाओगी?
कब तक अपने मन को बहलाओगी?
कब तक चोट मुझे पहुंचाओगी और खुद ही चोटिल होती जाओगी?
आखिर कब तक तुम झुठलाओगी?

मुझे देख नजरें झुकाओगी,कुछ कहने में शरमाओगी।
मुझे निःस्पन्द करके,तुम खुद स्पन्दित होती जाओगी।
जब पास से मेरे गुजरोगी, मुझे नजरंदाज करती जाओगी।
फिर कुछ दूरी पे जाकर , मुझ पर ही नजरें जमाओगी।
पर जब मैं पास में तेरे आऊंगा , धरती पे नजरे गड़ाओगी।
नजरें लेकिन तुम न मिलाओगी, फिर से तुम झुठला जाओगी।
आखिर कब तक तुम झुठलाओगी? बोलो, कब तक तुम झुठलाओगी?

तुम बोलोगी ये प्रेम नही, अधिकारों की मारामारी है!
फिर मुझे बता दो बस इतना, कि ये प्रेम क्या कोई अधिकारी है?
प्रेम की आखिर क्या परिभाषा है? क्यों इस शब्द की महिमा भारी है?
क्यों राधा – कृष्ण का 'प्रेम' अमर? क्यों जग में फिर प्रेम – पुजारी हैं?
क्या ये सब–के–सब बस झूठे है? तुम्हारी सोंच ही केवल न्यारी है!
तुम बता दो मुझको बस इतना, कब तक अपने जज़्बातों को मुझसे छिपाओगी?
आखिर कब तक तुम झुठलाओगी? बोलो, कब तक तुम झुठलाओगी?

तुम जब भी निःशब्द होती हो, शब्दहीन हो जाती हो।
चोट मुझे पहुंचाती हो, फिर बाद में पछताती हो।
रोती हो ,चिल्लाती हो , आँसू भी तुम बहाती हो।
दिन की भरी दुपहरी में, तुम 'मासूम' सुबह बन जाती हो।
आखिर सुबह भी जिद छोड़के , रात में ढल जाता है
लेकिन,तुम अपना जिद कब त्यागोगी? बोलो, कब तक तुम झुठलाओगी? आखिर,
कब तक तुम झुठलाओगी?

प्रभंजन कुमार
पंचम सेमेस्टर
स्नातक गणित विभाग

गुमनाम सैनिक

नाम तेरा कोई लेगा नहीं।
काम को तेरे कोई कभी कुछ कहेगा नही।
फिर क्यों तुम जान लुटाते हो।
क्यो अपना ये शीश कटाते हो।
लाश को तेरी कोई अपनाएगा तक नहीं।
कफन रख उसे कोई दफनाएगा तक नहीं।

घरवालों से क्या खता हुई तुम्हारे।
क्यू सजा उन्हें तुम देते हो।
क्यू अपनी यादों की बारिशों से ।
आंखे उनकी तुम भिगोते हो।
कारण तुम्हारी मौत का कोई जानेगा नहीं।
वतन के लिए मरे तुम ये बात तक कोई मानेगा नहीं।
ऐसी भी क्या देशभक्ति
आत्मा को भी जहाँ ना मिल पाएगी मुक्ति।

ना शौक शहीदों मे अपने नाम को लिखवाने का।
ना शौक तिरंगे संग अपनी लाश को दफनाने का।
मैं माफी मांगता हूँ अपनी माँ से
सेवा ना कर पाया उनकी।
लाश देखने का मौका भी मेरे जूनून ने उनसे छिनवाया
पर ये सोच कर वो खुश रहे कि मरते क्षण मुझे इक सुकून था।
बचपन से रघो मे बह रहा औरो की तरह वो पानी नहीं आपका खून था।

ना शौक मुझे उन आंसूओ के दरियाओं में बहने का।
ना शौक अपनी वीरता के किस्से सबसे कहने का।
मैं शौक बस इतना रखूं की मरते दम ये कह सकूँ
'''' जय हिंद ''''

हिमांशु राय
बी–टेक , पंचम छमाही

मेरा भारत महान

ये हदीश है, यही कुरान,
यही वेद, ये ही पुराण,
ये उर्दू है ,ये हिंदी है,
ये कुमकुम है, ये बिंदी है,
यह भगत सिंह सुखदेव गुरु,
पिस्तौल दिखाता राजगुरु,
यह पतिव्रता कोई सीता है,
यह ज्ञान की पुस्तक गीता है,
यह वीरों की जन्म स्थल,
विद्वानों का धाम है ये,
जो हंस कर फांसी चढ़ता है,
वो बालक खुदी राम है ये
यह चरखा है यह दांडी है,
सत्पथ पर चलता गांधी है,
अरविंद घोष की वाणी है,
यह रक्त से लिखी कहानी है,
आवाज उठाता मंगल है,

यह अबुल कलाम है संगल है,
यह अशफाक उल्ला खान भी है,
बिस्मिल की गजल की तान भी है,
यह बिरसा मुंडा, सावरकर,
लाला लाजपत वीर कुँवर,
वीरों की मंदिर थी जो अंडमान का
जेल है ये,
भारत को एकिकृत करता कोई सरदार
पटेल है ये।
यह वासुदेव मन्मथ भी है,
खून से सनी लथपथ भी है,
वंचिनाथन बाघा जतिन है ये,
ये सुबह शाम हर दिन है ये,
ये 63 दिन का अनशन है,
ये यतीन्द्र नाथ है रोशन है,
मनन वोहरा है हेमू कलानी है,
ये भगतसिंह की कुर्बानी है,
बादल, दिनेश, राजेंद्र, प्रफुल्ल,
रासबिहारी,उबैदुल्ल,
ईद है यह नवरात्रि है,
जो सादगी देखो शास्त्री है,
स्वतंत्रता का अथक प्रयास है ये,
देश बंधु चितरंजन दास है ये।
आजादी का दीवाना था जो
योगेश, अनंत सिंह है ये
घर घुसकर लन्दन में डायर वध
करता उधम सिंह है ये।
तात्या टोपे, नानासाहेब
लक्ष्मीबाई और नवसाद है ये।
अंग्रेजों के कोड़ों पर हँसता
चंद्रशेखर आजाद है ये।
ये देवो की जन्मभूमि है
ये विद्वानों की भूमि है।
ये वाल्मीकि रामायण है
ये गीतांजली का गायन है,
मुल्कराज आनंद है ये
युवा विवेकानंद है ये
अमृता प्रीतम,झुम्पा लहरी
और अरुन्धतीराय है ये।
देवदास की रचना करता
शरतचंद्र चटोपाध्याय है ये।
ये दिनकर ये ही निराला है

ब्रिटिश संसद ने 'भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947' में पारित किया और इसके साथ ही जम्मू कश्मीर सहित सभी रियासतों पर ब्रिटिश शासन का अंत हो गया। दो देशों का उदय भारत और पाकिस्तान के रूप में हुआ। देशी रियासतों का अधिकार था कि वो भारत या पाकिस्तान के साथ विलय कर ले या स्वतंत्र रहे। कश्मीर के तत्कालीन महाराजा हरि सिंह ने स्वतंत्र रहने का फैसला किया, लेकिन 20 अक्टुबर 1947 को पाकिस्तानी सेना द्वारा कश्मीर पर आक्रमण कर दिया गया। इस विकट परिस्थिति में राजा हरि सिंह ने भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किया। भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटन ने विलय को स्वकृति प्रदान की। जम्मू कश्मीर ने तीन विषयों पर भारतीय संघ की सर्वोच्चता को स्वीकार किया जो प्रतिरक्षा, विदेशी मामले तथा संचार थे। समझौते के अनुसार कश्मीर के निवासियों को कुछ विशेषाधिकार प्रदान किया गया जिसे अनुच्छेद 370 के नाम से जाना जाता हैं। जो निम्न हैं–

17 अक्टूबर, 1949 को संविधान में शामिल अनुच्छेद 370 भारतीय संविधान से जम्मू कश्मीर को छूट देता है तथा राज्य को संविधान का मसौदा तैयार करने का अनुमति प्रदान करता है। जम्मू कश्मीर में दोहरी नागरिकता का प्रवाधान था। यहां का अलग सविधान और ध्वज था। जम्मू कश्मीर की विधान सभा का कार्यकाल छह साल का होता था जबकि अन्य राज्यो का पांच साल होता हैं। जम्मू कश्मीर की महिला यदि भारत के किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से शादी करती थी तो उस महिला की नागरिकता खत्म हो जाती थी। सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार और आइपीसी के स्थान पर, यहां रणवीर दंड सहिता लागू था। कश्मीर के बाहर के राज्यो के व्यक्ति ना मतदान कर सकते थे और ना ही चुनाव में उम्मीदवार ही बन सकते थे। राज्य में आपात स्थिति में राज्यपाल शासन लगाए जाने का प्रवाधान था।

5 अगस्त 2019 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 और 35 अ के तहत् जम्मू कश्मीर को मिले विशेष दर्जे को समाप्त कर , जम्मू कश्मीर को दो भागो में बांट दिया गया। जम्मू कश्मीर और लद्दाख। अब जम्मू कश्मीर एक राज्य ना हो कर केंद्रशासित प्रदेश हो गया हैं।

पुष्कर कुमार
मीडिया अध्ययन विभाग

ये हरिवंश की मधुशाला है।
ये शुभद्रा है महादेवी वर्मा,
ये उपन्यासकार मनु शर्मा।
तुलसी, कबीर,रहीम,काली का
छोटा छोटा छन्द है ये
घर घर की जो व्यथा सुनाता है
कोई प्रेमचंद है ये।
यह चंद्रशेखर , सी बी रमन
वेंकटरमन ,राधाकृष्णन
यह मेघनाद साहा भी है
यह जहांगीर भाभा भी है
ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य
वराहमिहिर, महावीराचार्य
आर्यभट्ट यह बुद्धायन
यही कणाद, रामानुजन
वृक्षों में भी जाँ होती है
करता है ऐसा उद्घोष है ये
विज्ञान में क्रांति लाता
कोई जगदीश चंद्र बोस है
चरक, सुश्रुत, विश्वेश्वरैया है यह
अर्चना भट्टाचार्य है
बीरबल सहनी पौधों का दीवाना है
यह हरगोविंद खुराना है
अब्दुल कलाम का सपना है
अग्नि की एक उड़ान है ये
जो पुनः चंद्र पर जाएगा
वही तो चंद्रयान है ये।
ये यमुना है, ये गंगा है
फहराता नभ में तिरंगा है
कृष्णा,गोदा, महानदी भी है
यह युग–युग सदी सदी भी है
यह सरस्वती है सिंधु है
ये सूर्य यही तो इंदु है
यह कावेरी, कृष्णा भी है
रेगिस्तान की मृग तृष्णा भी है
यही महेंद्र हिमाचल है
यही सतपुरा है विंध्याचल है
ये शिवालिक, उदयगिरी भी है
यह बर्फ से घिरी– घिरी भी है
यह जगन्नाथपुरी भी है
मनाली और मसूरी भी है।
यह ताज महल है कुतुब मीनार
ये है सूर्य मंदिर कोणार्क
सुखद सुहावन सरस शील
विश्वकर्मा की तामीर है ये
भूमंडल का स्वर्ग है जो
वही जम्मू कश्मीर है ये।
जाकिर हुसैन तबलावादक
लता मंगेशकर सी गायक
ये बिस्मिल की है सहनाई
मदहोशी महफिल में छाई
ये तानसेन की राग दीप
गंगा यमुना की तहजीब
ये अमिताभ शाहरूख भी है
ये प्रगति को उन्मुख भी है
ये जाकिर खान की सख्ती है
ये दिल्ली पे काबिज तख्ती है
ये गीता ये ही कुरआन भी है
ये बापू की अरमान भी है
हमसब की जान है ये
कुछ ऐसा हिन्दुस्थान है ये
हाँ मेरा देश महान है ये
हम सबका देश महान है ये।

अमन मिश्रा
भौतिकी विभाग

बापू

बापू बड़े जादूगर थे तुम
बंदूकों से लकुटी भिड़ा दी,
चरखा क्या काता तुमने ,
अंग्रेजो की चरखी लगा दी ।

आजादी का बिगुल बजा के,
सोई हुई उम्मीद जगा दी,
सत्याग्रह के राह पे चल के ,
अंग्रेजो को पानी पिला दी ।

जला डाले सब उनके कपड़े,
मन में उनके आग लगा दी,
उठाए अपने कदम जिधर भी,
गोरी चमड़ी में आग लगा दी ।

अपमानो का बोझ, उठाके तुमने,
विश्व पटल पे देश की सम्मान बढ़ा दी ,
कारागार में रहकर भी तुमने,
' हिन्द स्वराज ' से देश को एकता की पाठ पढ़ा दी ।

सादगी से अंग्रेजो को चौंकाकर,
अहिंसा का देश को, पाठ पढ़ा दी ,
सीने पर गोली खाकर ,
शोनित अपना मिट्टी को चढ़ा दी ।

संकल्प श्रीवास्तव
जंतु विज्ञान विभाग

बिटिया

मेरा चंचल मन वो मीठा स्वप्न
मेरा लड़कपन अभी तक नहीं गया,
ना जाने कब मैं बड़ी हुई
बाबुल तेरी गलियां छोटी...
पग पग मे जैसे बीत गयी
वह अपने आँगन की रीति
इक छन मे जैसे बीत गयी...
ममता वह घनी प्रीती..

इस करुण ह्रदय के भितिचित्र पर
वो भूले दिवस उभरे थे
जब प्रथम बार मेरी किलकारी
तेरे आँगन में गूँजी थी..
तेरे सूखे चक्षु में खुशियों के नीर तैरे थे..

जब पग पग तेरी गुड़िया ने चलना शुरु किया
तेरी उंगली बनी सहेली थी
तू हँसता और हँसाता बाबुल
नयनों में तेरी ठिठोली थी...

मेरी गाड़ी तेरे कूल्हों पर
जब खूब इठला कर बैठती थी..
मानो जैसे राजकुमारी
बनी सारे गाँव मे फिरती थी..
हर हँसी खुशी सब तुझसे है
फिर भी बनी परायी क्यूँ!
बिटिया हूँ ,परायी हूँ
ये परंपरा किसी ने बनायी क्यूँ!!

पल्लवी कुमारी
मीडिया अध्ययन विभाग

प्रकृति के साथ सहजीवन का संदेश "छठ"

लोक आस्था का महा पर्व छठ भारत में ऋग्वेद काल से मनाया जाता रहा है । सूर्य उपासना की चर्चा विष्णु पुराण, भगवत पुराण आदि में विस्तार से की गई है। मध्यकाल आते–आते यह एक व्यवस्थित पर्व के रूप में समाज मे प्रतिस्थापित हो चुका था ।

छठ के धार्मिक इतिहास पर नजर डालें तो हमे इसकी समृध्दता का पता चलता है। इस पर्व के शुरूआत को लेकर कई मान्यताए भी प्रचलित हैंः–

यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है, एक चैत मास की शुक्ल पक्ष षष्ठी के दिन जिसे चैत छठ कहते हैं और दूसरा कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के षष्ठी के दिन जिसे कार्तिकी छठ कहा जाता है। चार रोज तक चलने वाले इस पर्व की शुरुआत तो चतुर्थी तिथि को हो जाती है मगर मुख्य पूजा षष्ठी को संपन्न होती है, इसी कारण इसका नाम छठ पडा।

सूर्योपासना का यह पर्व उत्तर भारत का एक मुख्य पर्व है, जिसे खासकर बिहार, झारखंड,पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के कुछ क्षेत्रों में मनाया जाता है। इस पूजा में धार्मिक कर्मकांड नहीं हैं, बल्कि एक दूसरे के पारस्परिक सहयोग से सारे कार्यों को संपन्न किया जाता हैं । यह पर्व समाजिक समरसता का उत्कृष्ट उदाहरण है जैसेः–डोम के यहाँ से कच्चे बांस का सूप लाया जाता है,तो कुम्हार के यहाँ से मिट्टी के दीप और ढकनी द्यकिसान भाईयो से कार्तिक मे होने वाले फल ,सब्जी जैसे ईख लिया जाता है।

छठ में चार दिनों का व्रत रखा जाता है ,पहले व्रत के दिन भात के साथ कद्दू की सब्जी खाना अनिवार्य माना जाता है। दूसरे दिन पवनैतिन खीर खाया जाता है जिसे खरना भी कहा जाता है। तीसरे दिन की शाम और चौथे दिन की सुबह मे क्रमशः डूबते और उगते सूर्य को दुग्ध अथवा पानी का अर्ध्य नदी या तलाब के किनारे दिया जाता है। इस प्रकार व्रत और पूजा संपन्न होती है। पूजा संपन्न होने के बाद मिथिला की महिलाए सामा चकेबा खेलती हैं। इस दौरान महिलाए अपने भाई के सुखी जीवन की कामना करती हैं। नौ दिन बाद यानी कार्तिक पूर्णिमा के दिन मिट्टी की संरचनाओ को नदी में विसर्जित कर दिया जाता है।

यह पर्व पूरी तरह से इको–फ्रेंडली है जिसमें शुद्धता का पुरा ध्यान रखा जाता है। यह पर्व मिल जुल कर कार्य करने के कारण सामूहिकता का बोध कराता है। एक तरफ जहाँ यह समाज को संयमित करता है वहीं दुसरी ओर नई पीढी को संस्कारित करने का भी काम करता है। यह प्रकृति पूजा के साथ साथ सामाजिक समरसता एवं समन्वय का संदेश भी देता है।

जमशेद आलम
मीडिया अध्ययन विभाग

वो जो रखती है ख्याल सबका,भूल जाती वही है हाल अपना
उसके बच्चों को मिले सफलता, होता है यही एक ख्वाब उसका
वो कोशिश करती है हर पल, सबको खुश रखने की
और दर्द हो उसे कोई, फिर भी सबके लिए, सबके सामने खुश दिखने की
वो छुपा लेती है, आँसू अपने, पर देख लेती है दुःख गैरों के भी
वो नहीं सह पाती तकलीफ दूसरों की
और हो जाती है दुःखी उनके परेशानियों से
वो जो रखती है ख्याल सबका, भूल जाती वही है हाल अपना।

कुमारी प्राची
मीडिया अध्ययन विभाग

दहेज

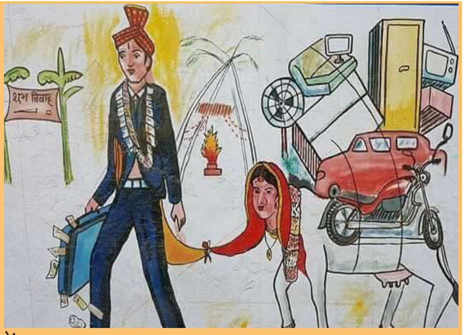

जब से पैदा होती है बेटी ,
तो एक ही बात होती है जमाने में
एक बाप लग जाता है तब से दिन – रात कमाने में,
कि जैसे भी हो दहेज तो कैसे भी जुटाना है,
और अपनी प्यारी बिटिया को उस दहेज से विदा कराना है।
तब बड़ा मुश्किल हो जाता है खुद को संभालना,
और दहेज के असहनीय दर्द से खुद को निकालना।
जब लड़के का बाप कहता है , कुछ शादी के बारे मे .
बात हो जाए आप से।
कि लड़के का बाप अब दहेज की बात करेगा,
न जाने उतनी रकम जुटा पाऊँगा या नहीं,
न जाने कितना कुछ गिरवीं रखना पड़ेगा कहीं।
एक डरावने सपने से डरावना होता है वो पल,
एक लड़की का बाप सोचे कैसे जाए ये टल
और बेटी की शादी का सपना किसी डरावने सपने सा लगता है।

सुरभि सिंह
मीडिया अध्ययन विभाग

कीमत

"दातुन ले लो , दातुन ले लो"

मैंने मुड़ के देखा , सामने सड़क के उस पर से आवाज आ रही थी । मेरा ध्यान एक बूढी औरत पर गया जो एक दातुन का गठर रखे हुए थी । वो एक–एक कर के दातुन को छिल रही थी, और उसके छोटे–छोटे टुकड़े कर रही थी । तभी उस बूढी औरत के सामने एक कार आकर रुकी, उसमे से एक धनी महिला निकली ।

वो बूढी औरत के पास आकर बोली दातुन कितने के ।

दो रुपये के एक मेम साहब – बूढी औरत बोली ।

वो महिला बोली पाँच दातुन लेने है – बोलो कितना होगा ।

मेम साहब दो रुपये में अब क्या कम होगा – बूढी औरत बोली ।

'कीमत ज्यादा है' कहकर वो वहां से चली गयी ।

मुस्कान जयसवाल
एम.बी.ए प्रथम सेमेस्टर

बेटी बचाओ

मुझे भी आने दो इस जग में
बन के नन्ही परियों जैसी !
मुझे भी खिलने दो इस जग में
आबाद किरण की किरणों जैसी!!

माँ तुम भी तो बेटी हो
अपने प्यारे बापू की ।
फिर देख क्यों जलती हो
जैसे बोझ हु तेरे माथों की।।
बेटे कुल दीपक है ,तो
हम भी इस कुल कीशान।
इज्जत से मान बढ़ाया हमने
हम भी इस देश की पहचान हैं।

भेदभाव का दिन गया माँ
अब तो नये सिरे से सोचो ।
दहेज की चिंता में आके
अपने दिल के दुकड़े को न बेचो।।
लोकतंत्र का देश है माँ यह
मुझे भी आने का पूरा हक हैं।
चिड़िया बन के चहकूँगी मैं
मुझे भी गुनगाने का पूरा हक है।।

एक छोटी सी विनती हैं
आने दो बेटी को जग में
आँगन आपका खिल उठेगा
चहचहाने दो बेटी को।।

नंदन कुमार
एम कॉम

सुनहरा स्वप्न

तू मोरी आस्था है प्रिय,
दर्शनीय तोरा रूप..
एक–टक देखत रहूँ निस–दिन,
सगरी जाड़ा,बरखा,धूप..

माया कीजौ तूने पहली दरश में,
तोरी छवि गयी मन में समाय..
वशिभूत हुआ पड़ा हूँ मैं,
चारों पहर मोरा सुध बिसराए..
इसी भँवर में डूबना चाहे मन,
एहसास ये पावन और अनूप..
तू मोरी आस्था है प्रिय,
दर्शनीय तोरा रूप..

ऐसा रंगा हूँ प्रीति में तोहरे,
रंग न उतरे मोसे..
साँस की आस अब तोहपे टीकी है,
मोरा जीवन जुड़ गया तोसे..
कल्पना भी तोरी करे चित्त–प्रसन्नचित,
बाकी जग मोहे लगे कुरुप..
तू मोरी आस्था है प्रिय,
दर्शनीय तोरा रूप..!

सन्नी कुमार मिश्रा
मीडिया अध्ययन विभाग

प्रकृति जरुरत पूरी कर सकती है, लालच नहीं– 'जलपुरुष' राजेंद्र सिंह

'ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान

Welcome to Distinguished Lecture on
Mahatma

विश्वविद्यालय में रैमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता व जलपुरुष के नाम से विख्यात राजेंद्र सिंह ने 'ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन: जल संरक्षण और प्रबंधन द्वारा अनुकूलन और शमन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने चित्रों के माध्यम से ही जल, जमीन, सूरज, बादल, पेड़–पौधों व मनुष्यों के आपसी संबंध, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन आदि को रोचक ढंग से समझाया। वर्ष 1985 की सूखी नदी व पहाड़ी की तुलना में जल संरक्षण के क्षेत्र में काम करने के बाद बदली हुई स्थिति में वर्ष 2000 में पुर्नजीवित नदी और उसके आस–पास की हरियाली की तस्वीर को प्रोजेक्टर की सहायता से दिखाया। आगे कहा कि प्रकृति में हम सब की जरुरत पूरी करने की शक्ति है, लेकिन एक भी आदमी की लालच पूरी करने की शक्ति नहीं है। अपने पूर्व के कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि के. आर. नारायणन जब राष्ट्रपति थे तो हमारे गांव में जाकर उन्होंने हमारी पांचों नदियों को देखा जो पुर्नजीवित हो गयी थीं और वहां गांव में नदी के लिए कार्य करने वालों को सम्मानित किया। जब राष्ट्रपति भवन परिसर स्थित मुगल गार्डन में तालाब बनाने की जरुरत पड़ी तो उसी गांव के अनपढ़ इंजीनियरों को बुलाना पड़ा। इसका मतलब है कि अभी भी भारत के लोकतंत्र में अच्छे लोगों का आदर होता है। अपने कार्यों और अनुभवों को विद्यार्थियों व शिक्षकों के साथ साझा करते हुए रेगिस्तानी इलाके में जल संरक्षण के बारे में बताया कि जब मैं वहां गया था तो हमारी सारी नदियां सूख गयी थीं, एक बूंद पानी नहीं था, कुएं सूख गये थे। सारा इलाका उजड़ा हुआ था। उस जमाने में गांव की महिलाएं गीत गाती थीं कि बादल तो आते हैं, हर साल मेरे गांव में। बरसते नहीं हैं। वे रुठकर कहां चले जाते हैं, मैं नहीं जानती। वहां जल संरक्षण के बाद हरियाली आयी। बाहर चले गये लोग वापस लौट आए। वहां महिलाएं अब गीत गाती हैं कि बादल आते हैं मेरे गांव में, बरसते हैं वो। इन गीतों के माध्यम से जल संरक्षण के बारे में प्रेरणादायक ढंग से बताया। गांधी जी कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि उनके जीवन में उत्तरदायित्व पहले था और अधिकार की बात बाद में थी। अगर आप ईमानदारी से काम करते हैं तो आप भूल जाते हैं कि आपके पास कितनी डिग्रीयां हैं, आपके काम का सम्मान होता है। काम करने वाले को डिग्री की जरुरत नहीं होती, जो काम नहीं करते उनको डिग्री की जरुरत होती है। इससे पूर्व अपने अध्यक्षीय संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने विश्वविद्यालय परिवार की तरफ से जलपुरुष राजेंद्र सिंह का स्वागत किया। आगे कहा कि राजनीतिक और प्रशासनिक अभिकरणों पर आश्रय रखने के स्थान पर सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान खोजने से संभवतः हमें ज्यादा मदद मिलती है। जल संरक्षण के क्षेत्र में राजेंद्र सिंह के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि अपने कार्यों को राजनीतिक प्रभाव से प्रयत्नपूर्वक बचाते हुए इन्होंने अपनी यात्रा को आगे बढ़ाया है। इस अवसर पर प्रो. आनंद प्रकाश, प्रो. अजय कुमार गुप्ता, डॉ. रफीक उल इस्लाम, डॉ. अभिजीत आदि शिक्षक, जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा व बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संपादकीय

मुख्य संरक्षक
प्रो संजीव कुमार शर्मा
प्रधान संपादक
प्रो अरुण कुमार भगत
संपादक
डॉ साकेत रमन

सलाहकार संपादक
डॉ पवनेश कुमार
डॉ प्रशांत कुमार
डॉ अंजनी कुमार झा
डॉ परमात्मा कुमार मिश्र
डॉ सुनील घोडके
डॉ उमा यादव
शेफालिका मिश्रा

डिजाइन लेआउट संपादक
चिन्मयी दास
समाचार संपादन
हरिओम कुमार
नवीन कुमार तिवारी
प्रमुख संवाददाता
आदित्य कुमार
अंतस सर्वानंद

मीडिया अध्ययन विभाग,
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार
द्वारा शैक्षणिक एवं आंतरिक वितरण
हेतु प्रकाशित

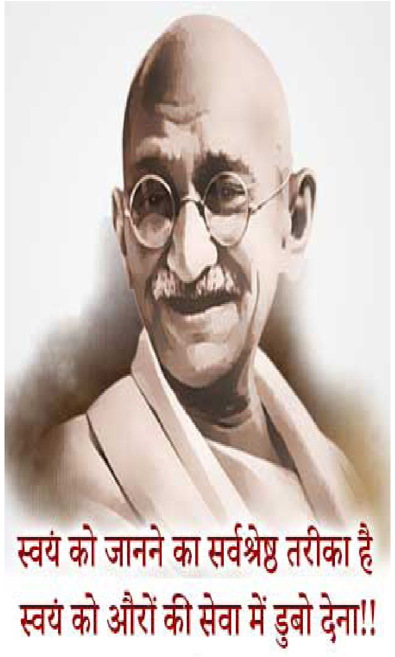
स्वयं को जानने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है
स्वयं को औरों की सेवा में डुबो देना!!

फोटो गैलरी

धनतेरस में दीपकों से जगमगाया विश्वविद्यालय परिसर

राष्ट्रीय एकता दिवस
रन फॉर यूनिटी

राष्ट्रीय एकता दौड़

पं दीनदयाल उपाध्याय परिसर का उद्घाटन करते हुए कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा

स्पोर्ट्स मीट का ट्रायल शुरू